विस्थापन के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी साहित्य

डॉ.जयचंद्रन.आर
आचार्य , हिंदी विभाग
केरल विश्वविद्यालय तिरुवनंतपुरम, केरल

सारांश :-

विस्थापन (Displacement) को सामाजिक विज्ञान में एक महत्वपूर्ण शब्द माना जाता है। यह शब्द विभिन्न प्रकार के सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं को व्यक्त करता है, जहां मानवीय निर्णयों के कारण लोग अपने स्थायी या अस्थायी निवासस्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाने के लिए मजबूर होते हैं। विस्थापन का कारण विभिन्न हो सकते हैं, जैसे कि विकास परियोजनाएं, नैतिक बाधाएं, संघर्ष, आराजकता, युद्ध, प्राकृतिक आपदायें आदि। विस्थापन की परिभाषा और भेदों के साथ, यह महत्वपूर्ण है कि हम उसके सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी समझें। विस्थापन सामाजिक न्याय और मानवाधिकार के मुद्दों को उठाता है, क्योंकि इसके दौरान लोगों के अधिकारों, स्वतंत्रता और गरिमा पर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए, सरकारों, सामाजिक संगठनों और अन्य हितधारकों को उन लोगों की सहायता करने के लिए जिम्मेदारी और सावधानीपूर्वक योजनाएं बनानी चाहिए जो विस्थापित लोगों को आरामदायक स्थानों पर समायोजित करें और उन्हें उनके नए संदर्भों में समर्थन प्रदान करें।

विस्थापन का स्वरूप:-

जब एक व्यक्ति या समूह अपने देश से निर्वासित होकर उस देश की भाषा में साहित्य रचना करते हैं तो उस व्यक्ति की रचना को विस्थापन साहित्य के रूप में परिभाषित किया जाता है|हिंदी शब्द विस्थापन के समानार्थी रूप में अंग्रेजी में diaspora/ exile/displacement आदि शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है ।इसके लिए हिंदी में निर्वासन/निष्कासन/जलावतनी आदि शब्द भी प्रयोग में है।वैश्वीकरण विस्थापन के नए पैटर्न को जन्म दिया है और दुनिया भर में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाओं को जागृत करने का कार्य किया है।

विस्थापन के संदर्भ में कुछ सवाल विशेष बल के जाय उत्पन्न होता है।

1.अंतरराष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद के बीच तनाव
2. स्थान और पहचान के बीच संबंध
3.संस्कृति और साहित्य के बीच के तरीके,

आदि गतिशीलता के नए पैटर्न,प्रवास और निर्वासन बहिष्करण के परिचित परिदृश्य पर तैयार किया जाता है।

परिभाषा:-

विस्थापन एक भूभाग का छूटना नहीं या एक भूगोल से निकल कर दूसरे भूगोल में चला जाना मात्र नहीं है, बल्कि अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपनी प्रकृति से भी बाहर होना है। जिसकी क्षतिपूर्ति भी संभव नहीं है। विस्थापन का विस्तार कहाँ से कहाँ तक हो सकता है, तो इस प्रश्न का उत्तर संभवतः यही होगा- गांव से जबरिया फेंके जानो एवं साँस्कृतिक चौपाल का ई-चौपाल में बदले जाने तक हो सकता है।

बाजारवाद के फलस्वरुप अपने भीतर आयी बेदखली तक लेकिन हम विस्तार का खतरा यह है कि विस्थापन का जो वर्तमान प्रसंग है, वह एकतरफा रह जाएगा।

सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो, विस्थापन एक सामाजिक मुद्दा है जो हमें यह समझने के लिए प्रेरित करता है कि हमारी सामाजिक, आर्थिक और न्यायिक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो स्थायी और अस्थायी विस्थापन को कम कर सके और अस्थायी विस्थापन के प्रभावों को समय–समय पर दूर कर सके। इसके लिए, नीतियों, कानूनों और कार्यक्रमों को विकसित करने की आवश्यकता होती है जो विस्थापन के प्रभावों का प्रबंधन करने, प्रतिसाद देने और पुनर्वास को सुनिश्चित करने में मदद करें।

अधिकांश मामलों में, विस्थापित लोगों को सामान्यतः समर्थन, संरक्षण, पुनर्वास और सुधार की आवश्यकता होती है। सरकारों को इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संबंधित विभागों, अधिकारियों और संगठनों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। यह आवश्यक है कि स्थायी और अस्थायी विस्थापन के बारे में सामरिक और व्यावसायिक नीतियों का विकास किया जाए, जो लोगों को सहायता, समर्थन और विकास के लिए संघर्ष करने में मदद कर सकें। विस्थापन एक मानवीय मुद्दा है जिसे हमें गंभीरता से देखना चाहिए। यह हमारे समाज के विकास और प्रगति को प्रभावित कर सकता है और साथ ही, यह हमारी मानवीयता, न्याय और समरसता के मानकों का परीक्षण कर सकता है।

हमें समझना चाहिए कि विस्थापित लोगों के साथ सहयोग और समर्थन करना आवश्यक है ताकि हम सामाजिक न्याय और मानवाधिकार के मूल्यों को प्रदर्शित कर सकें।

अच्छी नीतियों, कानूनों और कार्यक्रमों के साथ संयुक्त प्रयास द्वारा हम विस्थापित लोगों को आरामदायक और सुरक्षित नए स्थानों पर स्थापित कर सकते हैं। उच्चतम स्तर पर, हमें विस्थापन के कारणों को पहचानना, उन्हें नियंत्रित करने के लिए उपयुक्त नीतियों को अमल में लाना और संगठित सामाजिक सहायता और पुनर्वास कार्यक्रमों का विकास करना आवश्यक है। विस्थापन को न्यायिक, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के संदर्भ में समझना आवश्यक है। यह हमारी समाज की

स्थायित्वता, समरसता और सामाजिक समावेश की मान्यताओं को परीक्षण कर सकता है।स्वतंत्रता, अधिकार, और समानता के मूल्यों की संरक्षण और प्रोत्साहन करने के लिए हमें विस्थापन से प्रभावित होने वाले लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम विस्थापित लोगों को समर्थन, सुरक्षा, और समावेश महसूस कराएं ताकि उन्हें उनकी पुनर्वास की प्रक्रिया में सहायता मिल सके।समाज के सभी स्तरों पर, हमें विस्थापन के प्रभावों को मिटाने के लिए सामाजिक, आर्थिक, और मानव संसाधनों का संगठन करना चाहिए। विस्थापित लोगों को अवसरों का निर्माण करने, उन्हें पुनर्वास की प्रक्रिया में सक्षम बनाने, और उन्हें स्थायी और सुरक्षित निवासस्थान प्रदान करने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करना चाहिए।

विस्थापन के भेदों को समझना महत्वपूर्ण है ताकि हम उच्चतम स्तर पर उन्हें समझ सकें और इससे उत्पन्न होने वाली मानसिक, आर्थिक, और सामाजिक समस्याओं का समाधान करने के लिए उच्चतम स्तर पर नीतियों को विकसित कर सकें। विस्थापन के प्रभावों का प्रबंधन करने, विस्थापित लोगों को समर्थन प्रदान करने, और समाज को समानता और न्याय के मूल्यों पर आधारित बनाने के लिए हमें स्थायी और सुरक्षित स्थानों का निर्माण करना चाहिए।विस्थापन एक महत्वपूर्ण शब्द है जो आपके समाजशास्त्रीय और वातावरणीय अध्ययन के संदर्भ में महत्वपूर्ण है।विस्थापन के विभिन्न प्रकार हैं, जो निम्नलिखित हैं जैसे कि नौकरी के लिए शहरों की ओर लोगों का प्रवास, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में लोगों का प्रवास, और आदिवासी समुदायों को वनों से बाहर निकाल देना आदि |

विस्थापन के लक्षण :-

1.अव्यवस्था(Dislocation)
2.विषाद(Nostalgia)
3.भेदभाव(Discrimination)
4.अस्तित्व(survival)
5.सांस्कृतिक पहचान(cultural identity)
6.सांस्कृतिक परिवर्तन(cultural change)
7.बहु-सांस्कृतिकवाद(Multi culturalism)
8.दोहरे पहचान(Dual identity)

इन लक्षणों के साथ कोई भी रचना हमारे सामने आए तो उसे विस्थापित साहित्य की कोटि में रखा जाना समीचीन है।

विस्थापन के तीन प्रकार आज की परिस्थिति में संभव है:

1.देश निकाला जाना
2.रोज़ी रोटी के लिए घर बार छोड़कर दूसरे देश जाना
3.मानसिक विस्थापन

विस्थापन का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य : -

हिंदी में कविता के क्षेत्र में जो विस्थापन नज़र आता है खासकर उसमें कश्मीरी कवि अग्नि शेखर का जिक्र अधिक समीचीन प्रतीत होता है ।विस्थापन का दर्द क्या होता है? विस्थापितों की मानसिकता क्या होती है? इस पर उनकी कविताएँ हमें उदाहरण के रूप में कई चीजों का पोल खोलने वाली है।जवहर टनल ,मुझसे छीन ली गई मेरी नदी ,जीवन राग आदि कवितायें विशेष उल्लेखनीय हैं | काला दिवस उनकी एक और उल्लेखनीय कविता हैं ,पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार है:-

'आज के दिन
मैं यहूदियों की तरह किसी वेलिंग वाल के सामने जाकर
रोता चाहता हूँ जोर-जोर
अपनी जिनोसाइड और जलावतनी
भूल जाना चाहता हूँ/और पलट कर
कल्पनातीत जो-जो हुआ हमारे साथ
मैं छूना चाहता हूँ/एक नया और ताजा आकाश'|

दूसरा विस्थापन :-दूसरा विस्थापन लोगों को रोजी-रोटी के लिए घर-बार/गाँव/कस्बा छोड़कर दूसरे प्रदेश में जाकर बसना पड़ता है। विश्वग्राम की भावना बहु-सांस्कृतिकवाद से चलकर सम-संस्कृति, सम-भाषा एवं सम-सभ्यता की ओर अग्रसर है। रोजी-रोटी के लिए अपनी मातृभूमि को छोड़कर यात्रा एवं हुनर जिसका उद्देश्य हो गया है। ऐसे विस्थापित लोगों की त्रासदी अलका सरावगी के उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में दर्शाया गया है।

तीसरा विस्थापन -मानसिक विस्थापन:-इस प्रकार का विस्थापन भारतीयों को ज्यादा अनुभव होता है। पहले दूसरे व तीसरे प्रकार का विस्थापन 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में झलकता है। समकालीन कथा साहित्य में किसान लगभग गायब है। लेकिन अलका जी ने किसानों को इस रूप में रेखांकित किया है। 'हमारा इंडिया विकास के पथ पर बढ़ रहा है, उसके रास्ते में जो भी पत्थर आएँगे, उन्हें हटाना हमारा कर्तव्य है। किसानों का निर्वासन किसी बड़ी लीग में शामिल होना, बड़ी-बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों के लिये काम करना भला गुनाह कैसे हो गया? अगर वह काम भी नहीं है कि स्पेशल यानी कि सेज बनाने के लिए दो चप जौ किसानों को उजाड़ रही है तो क्या वे भी गुनेहगार हैं ? सरकार, कंपनी,किसान सब अपना अपना फायदा देख रहे हैं'(एक ब्रेक के बाद ,पृ.सं -146)मानसिक विस्थापन को समझाने के लिए ये पंक्तियाँ भी अत्यंत समीचीन प्रतीत होता है :

'तुम्हें क्या मालूम कि वहाँ बिज़िनेसमैन के पास बड़े से बड़े हो जाने का ग्लोबल सपना है, दलाल का दूसरों की मेहनत में हिस्सा पाते रहने का सपना है, नेता का स्विज़र्बैंक में अकाउंट खोलने का सपना है, अफसर का घूस की रकम सपरिवार शॉपिंग मॉल में खर्च करने का सपना है। तुम अखबार पढ़ते हो या नहीं, गांवों के पास सपना है शहर बनने का, महानगरों के पास मेट्रोपोलिस बनने का, हिमालय के सपनों की कब्रगाह पर अब नए सपने आ गये है बंधु(एक ब्रेक के बाद ,पृ-सं 214) वैश्वीकरण के चलते इस प्रकार का विस्थापन बढ़ा और सम संस्कृति, भाषा एवं सभ्यता की बात चर्चित होने लगी।फिलहाल भारत की संस्कृति भारतीय नहीं,विदेशी भी नहीं,बल्कि संस्कृति

विभाजित होती जा रही है। विस्थापित होती जा रही है। इस प्रकार के सांस्कृतिक बदलाव की कई सारी कहानियाँ है- सुभाष चंद्र कुशवाहा की कहानी 'नून तेल मोबाइल', उदय प्रकाश का 'पॉल गोमरा का स्कूटर',जयनंदन का 'विश्व बाजार का ऊंट', अमरीक सिंह दीप का 'ड्राकुला', सुभाष पंत का 'बाज़ार', परितोष चक्रवर्ती की कहानी 'अंधेरा समुद्र' आदि।

ऋषिकेश सुलभ की कहानी **'डाइन'** पढ़ने पर यह विस्थापित मानसिक द्वंद्व हमें घेर लेता है।डायन का नायक कोशी नदी की बाढ़ में किसी लापता लाश पर कब्जा करके बाढ़ में मरने वालों की सूची में वह अपने बाप का नाम दर्ज करता है और पैसा लेता है। लापता लोगों में अपनी माँ का नाम भी लिखवाकर वह पैसा वसूल करता है।तीन महीने के बाद जब माँ लौट आती है तो वह उसे पहचानने से इंकार करता है, माँ को देख कर उसे लगता है कि मुआवज़े के रुपए कोशी नदी में बहे जा रहे हैं ,और वह माँ के सामने 'डायन डायन' चिल्लाता है ,क्यों कि नायक मानसिक रूप से अत्यंत विस्थापित हो गया है | उदय प्रकाश का **'पॉल गोमरा का स्कूटर'** का नायक राम गोपाल सक्सेना अपनी अस्मिता से पलायन चाहता है।वह अपाची इंडियन, रेमो फर्नांडिस,साम पित्रोदा आदि की बराबरी करने के लिए अपना असली नाम राम गोपाल सक्सेना को बदल देने का निर्णय कर लेता है। अपने परिवेश से विखंडन वादी संस्कृति को वह अपना लेता है। इसकी वजह से बदल देता है अपना नाम राम गोपाल से पॉलगोमरा। अपने विघटित मानसिक स्थिति के कारण प्रेमचंद, लल्लूलाल,हज़ारीप्रसाद, कबीरदास आदि नाम उसे पिछड़ा, दकियानूस और अधम दर्जे का लगने लगा। विस्थापन के दौर में पिता पुत्र के संबंध का एक अनोखा दास्तान है देवेंद्र की कहानी **'क्षमा करो हे वत्स'**।बहू के किसी और के साथ भाग जाने पर दांत पीसते हुए पिता बेटे से कहता है- हिजड़े जनखे! बूत नहीं था तो मुझसे कहा होता। उत्तर में बेटा चीख उठता है- मैंने आपको मना किया था क्या? हिंदी कहानी में ऐसे बाप बेटे का चित्रण भी मिलता है। तीसरे प्रकार का यह विस्थापन की मानसिकता यह विखंडित,विस्थापित,विभाजित मन का यह उपभोक्तावादी आकर्षण,विकर्षण उसे अपने समाज और संस्कृति से काटता है साथ ही साथ उसको समाज और संस्कृति से अलग भी कर देता है| जैसे गोमरा की कविता में व्यक्त की गयी है :-

'प्रजातियाँ लुप्त हो रही है
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी/हत्था में न हो शामिल
और संभव हो तो संभाल कर रख लें
उनके चित्र/ये चित्र अतीत के स्मृति चिह्न हैं' |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.एक ब्रेक के बाद -अलका सरावगी
1. काला दिवस –अग्निशेखर
2. डाइन – ऋषिकेश सुलभ
3. पॉल गोमेरा का स्कूटर –उदय प्रकाश
4. क्षमा करो हे वत्स –देवेन्द्र

सूरीनाम की हिंदी कविता: सूरीनामी संस्कृति का धरोहर

ब्लेस्सनराजू
शोधार्थी हिंदी विभाग
केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

डॉ.आर.जयचंद्रन
आचार्य
हिंदी विभाग, केरल
विश्वविद्यालय

सूरीनाम, हमारे देश से बहुत दर स्थित है, बावजूद इसके ,यह देश भारत से एक अटूट आस्था रखने वाला भारत का ही एक हिस्सा है | सरनामी भाषा हिंदी की एक बोली की तरह है। आज इस भाषा में साहित्यिक कृतियाँ हैं। सूरीनाम में हिंदी भाषा और साहित्य का उत्थान भारत के गिरमिटिया मजदूरों के परिश्रम से हुआ है। आज, सूरीनाम में हमारी तीसरी और चौथी पीढ़ी बसी हुई है।हर साहित्य की अपनी एक विशेष शैली होती है, और सूरीनामी हिंदी भी इस दृष्टि से अद्वितीय है। कविता पढ़ते समय हम अनुभव करते हैं कि सूरीनामी हिंदी , हिंदी एवं हिंदी की संरचना से बहुत सटा हुआ है। सरनामी हिंदी मूल रूप से हिंदी ही है, परंतु यह भारत की अवधी बोली से साम्य रखने वाला है। सूरीनाम के प्रमुख कवि सूरजन परोही जी के अनुसार " सरनामी हिंदी हमारी बोलचाल की भाषा है। हमारे पुरखे जो गाँव से आए थे भारत के अलग-अलग गाँवों से थे, उनकी भाषा में कुछ डच मिलाकर बोलचाल की सरनामी बन गई। विद्वान लोग तो शुद्ध हिंदी ही चाहते हैं।"[१]

सूरीनामी कविता की भाषिक संरचना में उनकी गिरमिटिया मजदूरी, दर्दनाक जीवन-संघर्ष, प्रतिरोध आदि परिलक्षित होते हैं | सूरीनाम के भारतीयों का तन, मन, जीवन और संस्कृति में जो बदलाव आया है वही इन कविताओं की मूल चेतना है | सूरीनाम के साहित्य के बारे में विमलेश क्रांति वर्मा जी ने इस प्रकार लिखा है:- "सूरीनाम के सभी साहित्यकारों ने बहुत अधिक मात्रा में साहित्य भले ही न रचा हो किन्तु जितना भी साहित्य रचा गया है उसमें विषयगत विविधता है। प्रवास का दर्द, देश छोड़ने का मलाल, अपनों की याद, नई जगह पर मिले कष्ट व यातनाएँ, और अपनी संस्कृति व भाषा के प्रति लगाव है। सूरीनाम के हिन्दी साहित्य में हिन्दुस्तानियों के जीवन-संघर्ष की कहानी है, उनकी प्रगति का विवेचन है, मन में उठने वाले भावों का चित्रण है।"[२]

सूरीनाम की कविताओं का विकास पूर्ण रूप से 1950 के बाद ही हुआ है। इन कविताओं की शिल्पगत एवं कथ्यगत विशेषतायें और विविधता हिंदी से अपेक्षाकृत बहुत पीछे हैं। हिंदी साहित्य आज नव विमर्शों और वादों के बूते पर आगे बढ़ रही है। हिंदी कविताओं की भाषा, लोकप्रियता, संवेदनशीलता, आधुनिकता, अद्वितीयता आदि उनके साहित्यिक परंपरा से जुड़े हैं। लेकिन सूरीनामी कविताओं के लिए एक ख़ास परंपरा विरासत में नहीं मिली है। अब भी सूरीनामी कविता विकास के पथ पर है। प्राप्त कविताओं को विश्लेषण करते वक्त यह महसूस